पोली हाउस खेती ने बदले हालात

मैं शिवचरण सैकडा दौसा जिले की तहसील सिकराय के ग्राम गीजगढ का रहने वाला हूॅं। हमारे परिवार में हम 2 भाई तथा 4 बहिने है। मेरे पिताजी गॉव में कपडे की दुकान करते थे। सभी आस पास के गॉवो में पिताजी की अच्छी जान पहचान थी। पिताजी सरल स्वभाव के थे जिसके कारण वे हमेशा किसानो की आर्थिक मदद किया करते थें। धर पर हमारे अधिकांश किसान आर्थिक मदद के रूप में दी गयी धनराशि को वापस लौटाते वक्त हमेशा अपनी व्यथा को साझा किया करते थें। जिसमे फसल का खराब होना, कीट–व्याधि के प्रकोप, बहुत अधिक मेहनत के बाद भी आय नहीं होना बताया करते थें।

वर्ष 1981 में मै सांख्यिकी विषय में स्नातकोत्तर की पढाई पूर्ण कर चुका था और अपने कैरियर के लिये योजना बना रहा था। ततसमय हमेशा घर में होने वाला यह वार्तालाप मुझे विचलित करता रहता था। उन्ही दिनो पिताजी बीमार रहने लगे तथा घर की देखभाल करने वाला अन्य और कोई नहीं था, इन्ही दिनो मेरी साख्यिकी विभाग में सरकारी नौकरी लग गयी। पिताजी के बीमार रहने तथा सरकारी नौकरी मे पदस्थापन दूर जिले में होने के कारण मेरे द्वारा सरकारी नौकरी के स्थान पर घर पर रहने तथा कोई व्यवसाय करने का निर्णय लिया गया।

पिताजी की कपडे की दुकान मेरे पास उपलब्ध पहला विकल्प था। लेकिन कपडे की दुकान पर किसानों का आना एवं अपना दुख दर्द साझा करने से मुझे अंदर तक झकझोर रखा था। अतः मैंने कपड़े की दुकान चलाने से हटकर अपनी पुशतैनी जमीन जो कि बंजर पडी थी पर खेती करने का निर्णय लिया। यह निर्णय परिवार के सामूहिक निर्णय के विपरीत था।

सबसे पहले मेरे द्वारा साख्यिंकी के विद्यार्थी होने के कारण आंकडे एक्त्रित किये जाकर उनका विश्लेषण किया गया तो मैने पाया कि परम्परागत फसलो के स्थान पर नवाचार यदि किया जावें तो अधिक लाभ अर्जित किया जा सकता है। ऐसे में मेरे द्वारा उद्यान विभाग से सम्पर्क कर बेर का बगीचा लगाने का निर्णय लिया गया। बगीचा लगाने के 3 साल में फल आने लगे, मैंने ग्रेंडिग एवं पैकिग का कार्य भी किया व मेरे द्वारा उक्त फल नई दिल्ली भेजने पर मुझे अधिक लाभ मिलने लगा। इससे मुझे प्रोत्साहन मिला और साथ ही परिवार वालों को भी अच्छा लगा । इसके बाद मैने ऑवला, लसोडा, नींबू एंव अनार के बगीचे लगायें।

मुझे वर्ष 2014 में जयपुर जिले के ग्राम बस्सी मे राजस्थान सरकार द्वारा स्थापित सेंटर ऑफ एक्सीलेन्स के भ्रमण का अवसर मिला। भ्रमण के बाद मेरे द्वारा प्रत्येक पहलू का बारीकी से अध्ययन किया गया तथा यह पाया गया कि यदि मेरे द्वारा संरक्षित क्षेत्र में सब्जियो की खेती की जावें तो प्रति वर्ग मीटर अधिक लाभ कमाया जा सकता है।

इसके बाद मैनें विभिन्न सब्जियो की मंडी में आवक एवं मॉग को देखते हुये खीरा उगाने का निर्णय किया जिसकी तकनीकी, फसल प्रबंधन, पौध संरक्षण उपाय आदि सभी प्रायोगिक रूप से राजस्थान सरकार के बस्सी फार्म से सीखा। वर्ष 2015 में 4000 वर्गमीटर क्षेत्र में पोली हाउस की स्थापना की, जिसमे अभी तक 5 फसले मेरे द्वारा ली जा चुकी है।

खीरे की एक फसल 120–140 दिन में पूरी हो जाती है। मेरे 4000 वर्गमीटर में लगभग 10500 पौधो का रोपण करता हॅं। पूरे साल मे दो फसल कर लेता हू जिससे मुझे लगभग 11.00–12.00 लाख रू की सकल आमदनी हो जाती है, जिसमें से आधा खर्च करने के बाद भी मुझे 5.00 लाख की शुद्व आमदनी हो रही है।

शहरो के नजदीक संरक्षित क्षेत्र में खेती किसानो की आय में बढोत्तरी का अच्छा जरिया है। बाजार मांग के अनुसार यदि किसान भाई तकनीक से इसकी खेती करे तो अधिक लाभ प्राप्त कर सकते है।